Ministry of Culture
Government of India

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

कलानिधि विभाग

प्रो. नामवर सिंह स्मारक व्याख्यान में आपको सादर आमन्त्रित करता है

दिनांक : 27 जुलाई (बुधवार), 2022, समय : सायं 4:00 बजे

स्थान : समवेत सभागार, आइजीएनसीए, जनपथ

विषय : भर्तृहरि का दर्शन : परवर्ती चिंतन के संदर्भ में

वक्ता

प्रो. मिथिलेश चतुर्वेदी

प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष,
संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

अध्यक्षता

श्री रामबहादुर राय

अध्यक्ष,
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास

स्वागत वक्तव्य

डॉ. सच्चिदानंद जोशी

सदस्य सचिव,
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

परिचय

प्रो. रमेश चन्द्र गौड़

विभागाध्यक्ष, कलानिधि,
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

प्रो. नामवर सिंह (1926-2019)

28 जुलाई 1926 जीअन पुर, बनारस (उत्तर प्रदेश) में जन्मे प्रो. नामवर सिंह हिंदी साहित्य के गौरव पुरुष रहे हैं। वे हिंदी में अपभ्रंश साहित्य से आरम्भ कर निरंतर समसामयिक साहित्य से जुड़े हुए आधुनिक अर्थ में विशुद्ध आलोचना के प्रतिष्ठापक तथा प्रगतिशील आलोचना के प्रमुख हस्ताक्षर थे। सन् 1956 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, सागर विश्वविद्यालय तथा जोधपुर विश्वविद्यालय में अध्यापन किया। सन् 1974 में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) आए और यहाँ 18वर्षों तक हिंदी के प्राध्यापक रहे। भारतीय भाषा केन्द्र, जेएनयू के संस्थापक व प्रथम अध्यक्ष भी रहे। प्रो. नामवर सिंह अपनी सेवा-निवृत्ति (सन् 1992) के पश्चात् इसी केंद्र में "प्रोफ़ेसर एमेरिटस" भी रहे। वे **बकलम खुद, इतिहास और आलोचना, छायावाद, कविता के नए प्रतिमान, कहानी : नई कहानी, पृथ्वीराज रासो की भाषा, हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग, दूसरी परंपरा की खोज, वाद विवाद संवाद** जैसी महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के लेखक रहे। प्रो. सिंह को साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत भारती सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान एवं शलाका सम्मान जैसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। हैदराबाद विश्वविद्यालय ने उन्हें डी. लिट. की मानद उपाधि से अलंकृत किया। वह दो बार महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलाधिपति भी रहे।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय ने वर्षों से प्रख्यात विद्वानों तथा कलाकारों के निजी पुस्तकालय संग्रहीत किए हैं। जो कला एवं सम्बन्धित अध्यन के क्षेत्र में एक विशेष महत्त्व रखता है। प्रो. सुनीति कुमार चैटर्जी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, ठाकुर जयदेव सिंह, डॉ. कपिला वात्स्यायन, देवेंद्र स्वरूप एवं श्याम बेनेगल इनमें से कुछ प्रमुख निजी संग्रह हैं। इसी श्रृंखला के अन्तर्गत प्रो. नामवर सिंह जी ने अपने जन्मदिन (28 जुलाई 2018) पर गिफ्ट डीड लिखकर अपनी निजी संग्रह को कलानिधि के संदर्भ पुस्तकालय को उपहार-स्वरूप भेंट किया।

उनके इस निजी संग्रह में लगभग 22,000 पुस्तकों एवं समसामयिक पत्रिकाओं का एक विशाल भण्डार है। इस संग्रह में मुख्य रूप से हिंदी साहित्य तथा प्रसिद्ध हिंदी लेखकों के रचनावली, इतिहास, राजनीति विज्ञान और भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन आदि से सम्बन्धित पुस्तकें हैं।

प्रो. मिथिलेश चतुर्वेदी

मिथिलेश चतुर्वेदी दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष रह चुके है। उनके अनेक लेख एवं शोधपत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है। भर्तृहरि-कृत वाक्यपदीय पर उनकी पुस्तक Vrittisamuddesa of Bhartrhari's Vakyapadiya: A study के अतिरिक्त उन्होंने कुछ ग्रंथो का संपादन किया है जिनमे Bhartrhari: Language, Thought and Reality और लघुसिद्धान्तकौमुदि के डॉ काशीराम-कृत अंग्रेजी अनुवाद के तीन खंड शामिल हैं। उनके द्वारा अनूदित पुस्तकें हैं- गौरीनाथ शास्त्री की प्रसिद्ध कृति Philosophy of Word and Meaning का हिंदी अनुवाद जो शब्दार्थमीमांसा शीर्षक से प्रकशित है एवं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित काव्यनाटकसंग्रह भाग 1, अभिनवगुप्त एवं पंडितराज जगन्नाथ सस्ता साहित्य मंडल से उनकी पुस्तक उपनिषद नवनीत और भर्तृहरि के वाक्यपदीय पर उनके दो अन्य ग्रन्थ इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र से हाल ही में प्रकाशित हुए हैं।